

मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ

मुहावरा :- मुहावरा बात कहने की एक शैली है। यह अरबी भाषा के 'मुहावर' शब्द से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है - सुझाव करना या बातचीत।

“(लक्षणा व व्यंजना) द्वारा वह सिद्ध वाक्य जो किसी बोली जाने वाली भाषा में प्रचलित होकर रूढ़ हो गया हो तथा पक्षश अर्थ के बजाय सांकेतिक अर्थ देता हो”

‘मुहावरा’ कहलाता है, जैसे - खिचड़ी पकाना, लाठी खाना, नाम धरना आदि।

मुहावरो की निम्न विशेषताएँ होती हैं :-

1. मुहावरो का शाब्दिक अर्थ नहीं, बल्कि (सांकेतिक) अवबोधक अर्थ लिया जाता है। जैसे 'खिचड़ी पकाना' इसका शाब्दिक अर्थ होगा - खिचड़ी बनाना, परन्तु मुहावरे के रूप में सांकेतिक अर्थ होगा - चिन्तन करना।
2. मुहावरे का अर्थ (प्रसंग) के अनुसार होता है, जैसे - 'लड़ाई में खेत जाना' इसका अर्थ है 'युद्ध में शहीद हो जाना' न कि लड़ाई के स्थान पर किसी खेत का चक्के आना।
3. मुहावरे का मूल रूप कभी नहीं बदलता अर्थात् मुहावरे का स्वरूप (स्थिर) होता है, अन्यथा मुहावरा नष्ट हो जाता। जैसे 'कमर टूटना' एक मुहावरा है इसके स्थान पर 'कटि भंग' शब्द का प्रयोग नहीं किया जा सकता।
4. हिन्दी के अधिकांश मुहावरो का सीधा संबंध शरीर के विभिन्न (अंगों) यथा - मुँह, कान, नाक, हाथ, पाँव, आँख, खिर आदि से होता है, जैसे - मुँह की खाना, कान बड़े होना।
5. मुहावरा भाषा की समृद्धि तथा सप्रयत्न के विकास का (मापक) होता है।

मुहावरों का महत्त्व :-

- (i) भाषा को सजीव बनाते हैं।
- (ii) कथन को प्राणयुक्त एवं प्रभावशाली बनाते हैं।
- (iii) भाषा में सरलता एवं सरसता उत्पन्न करते हैं।
- (iv) भाषा में प्रवाह व चमत्कार उत्पन्न करते हैं।
- (v) भाषा को समृद्ध बनाते हैं।

मुहावरों के प्रयोग में सावधानियाँ :-

1. पहले मुहावरा फिर उसका अर्थ तथा अगली लाइन से वाक्य प्रयोग करना चाहिए, जैसे :-

बात का घनी - बाधों का पक्का
में जानता हूँ कि वह बात का घनी है।

2. मुहावरे का वाक्य प्रयोग करते समय तुलना नहीं करनी चाहिए, जैसे - के समान, की तरह, के जैसा आदि शब्दों का प्रयोग नहीं। यथा :-

अँखों की लकड़ी - एक मात्र सहारा

अपने बड़े माता-पिता का एक-मात्र संलग्न मोहन
उनके लिए अँखों की लकड़ी (के समान) है।

3. मुहावरों को कहीं भी डाल देना गलत है, बल्कि कारण बताते हुए कार्य बताना है।

4. धिले-पिटे वाक्य प्रयोग से बचना चाहिए। (पाक, चीन X)

5. वाक्य प्रयोग का संदर्भ यथा संभव होना चाहिए।

6. वाक्य प्रयोग में मुहावरे का प्रयोग करना होता है न कि उसके अर्थ का।

7. मुहावरे को एक वाक्य में लिखना चाहिए, जैसे :-

टेढ़ी खीर होना - कठिन काम होना।

अपने देश में प्रचलन की जड़े इतनी गहरी हो गई हैं कि इसे खत्म करना टेढ़ी खीर हो गई है।

लोकोक्तियाँ / कहावतें

लोकोक्ति का अर्थ है 'लोक समाज में कही जाने वाली वाक्यांश' तथा कहावत का अर्थ है:— 'कही जाने वाली बात'।

Def. ऐसा वाक्य जो समलक्षित ढंग से, संक्षेप में, किसी सत्य या नीति का आशय, सशक्त रूप से व्यक्त करे तथा अधिक समय तक प्रयोग में आकर जनजीवन में प्रचलित हो गया हो लोकोक्ति/कहावत कहलाता है। Def.

लोकोक्तियों / कहावतों की निम्न विशेषताएँ होती हैं:—

1. लोकोक्तियों / कहावतें प्रत्यक्ष अर्थ नहीं बल्कि सांकेतिक अर्थ देती हैं।
2. लोकोक्तियों / कहावतों में जीवन के गहरे तथा मूल्यवान् अनुभव दिये रहते हैं, इसलिये इन्हें 'ज्ञान की घिरावियाँ' कहा जाता है।
3. लोकोक्तियाँ / कहावतें एक व्याक्ति से सम्बन्धित न होकर 'जन साधारण की घरोरों' होती हैं।

लोकोक्तियों / कहावतों का महत्व:—

1. बोली को अधिक प्रमाणिक तथा जोरदार बनाती हैं।
2. भाषा स्पष्ट तथा जीवन्त हो उठता है।
3. भाषा को सुन्दर बनाने के साथ-2 जीवन को सीख भी देती हैं।
4. इनमें गहरे व मूल्यवान् अनुभव दिये रहते हैं।
5. अलंकार शास्त्र में 'लोकोक्ति अलंकार' नाम से प्रसिद्ध।

लोकोक्तियों / कहावतों के प्रयोग में सावधानियाँ :-

- (i) कहावतों का वाक्य प्रयोग $2\frac{1}{2}$ - 3 लाइन में देना चाहिए
- (ii) पहले प्रकरण देना है फिर कहावत । प्रकरण ऐसा होना चाहिए जो कहावत सिद्ध करे ।

~~प्रकरण~~ (iii) प्रकरण समाप्त होने पर - ठीक ही कहा गया है
- यह तो वही बात हुई
- महाँ यह बात चरितार्थ होती है

आदि शब्दों का प्रयोग करते हुए कहावतों को जोड़ना चाहिए ।

मुहावरा तथा लोकोक्ति की पहचान :-

- (i). 95% मुहावरों के अन्त में 'ना' आता है।
- (ii). मुहावरों के अन्त में क्रिया होती है।
- (iii). 95% मुहावरों का सम्बन्ध शरीर के विभिन्न अंगों से होता है।
- (iv) मुहावरे छोटे होते हैं, लोकोक्तियाँ बड़ी ।
- (v). लोकोक्तियों / कहावतों में कोई न कोई शिक्षा होती है।

मुहावरा तथा लोकोक्ति में अन्तर

क्र.सं.	मुहावरा	लोकोक्ति
1.	मुहावरे <u>वाक्योपश</u> हैं।	लोकोक्ति <u>पूर्ण वाक्य</u>
2.	मुहावरों का <u>स्वतंत्र</u> प्रयोग नहीं हो सकता।	कहावतों का <u>स्वतंत्र</u> प्रयोग होता है।
3.	मुहावरों का <u>अर्थ</u> बिना <u>वाक्य</u> प्रयोग के स्पष्ट नहीं होता।	लोकोक्तियाँ अपने आप में अर्थपूर्ण होती हैं।
4.	मुहावरा एक पक्षीय होता है अथवा भाषा को <u>सुन्दर</u> बनाता है।	लोकोक्तियाँ भाषा को सुन्दर बनाने के साथ-2 <u>सीख</u> भी देती हैं।
5.	मुहावरा <u>होला</u> होता है तथा भाव को उद्दीप्त करता है।	लोकोक्ति <u>बड़ी</u> होती है तथा स्वयं में भावपूर्ण होती है।
6.	मुहावरों की <u>प्रिया</u> काल, वचन तथा <u>लिंग</u> के अनुसार बदल जाती है।	लोकोक्तियों पर काल, वचन, लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता अथवा लल की तल रहती है।
7.	मुहावरा <u>मात्र</u> पर आधारित होता है।	लोकोक्ति <u>बोली</u> पर आधारित होती है।
8.	मुहावरों का प्रयोग अपेक्षाकृत <u>पदा-लिखा</u> समाज अधिक करता है।	लोकोक्तियों का प्रयोग अपेक्षाकृत ग्रामीण समाज में अधिक होता है।
9.	ये मुख्यतः <u>गद्य</u> रूप में होते हैं तथा सामान्यतः मौखिक के साथ-2 <u>लिखित</u> रूप में प्रयुक्त होते हैं।	ये - मुख्यतः पद्य रूप में होते हैं तथा सामान्यतः मौखिक रूप में अधिक प्रयुक्त होते हैं।
10.	मुहावरों के उद्भव व विकास की दिशा <u>ऊपर से नीचे</u> की ओर होती है।	लोकोक्तियों के उद्भव व विकास की दिशा नीचे से ऊपर की होती है।

भावार्थ लिखते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए :-

- ① मूल अवतरण को दो-तीन बार ध्यान से पढ़ना तथा विचारों को रेखांकित करना।
- ② व्यर्थ बातों को हटा देना, रेखांकित वाक्यों व शब्दों को मिलाकर सार्थक वाक्य बना लेना, रचित स्थान की शक्ति के लिए वाही शब्द लिख जा सकते हैं।
- ③ पूरे शब्दों को गिनकर सार्थक वाक्यों के शब्द को गिना कर लेना।
- ④ भावार्थ की भाषा सरल, स्पष्ट तथा (क्रमबद्ध) होना चाहिए।
- ⑤ अपनी ओर से खण्डन-मण्डन या (टीका-टिप्पणी नहीं) करना चाहिए।
- ⑥ (अलंकारिक) भाषा या शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

व्याख्या [Explanation]

व्याख्या किसी भाव या विचार का विस्तार से विवेचना है। इसमें अध्ययन, चिन्तन, मनन की पूरी स्वतंत्रता रहती है।

(i). व्याख्या (प्रसंग-निर्देशित) होनी चाहिए।

(ii). मूल विचार / भाव की (संतुलित) विवेचना होनी चाहिए।

(iii). मूल विचार के (गुण / दोष) पर समान रूप से प्रकाश डालना चाहिए।

(iv). रुक लाइन की व्याख्या (10 लाइन) में देना चाहिए।

(v). महत्वपूर्ण बातों पर अंत में (टिप्पणी) देना चाहिए।

संक्षेपण (Precis)

किसी अवतरण के अप्रसंगिक, असम्बद्ध, पुनरावृत्त, अनावश्यक बातों को हटाकर साम्प्रसार्य, उपयोगी तथा मूल तथ्यों का प्रवाहपूर्ण संक्षिप्त संकलन 'संक्षेपण' कहलाता है।

संक्षेपण एक मानसिक व्यायाम है जिसे निरन्तर अभ्यास द्वारा ही साधित किया जा सकता है। संक्षेपण के निम्नालिखित गुण होते हैं :—

- (i). संक्षिप्तता संक्षेपण का मुख्य गुण है।
- (ii). संक्षेपण स्वतः पूर्ण होना चाहिए, कोई भी महत्वपूर्ण बात नहीं इरना चाहिए।
- (iii). भाषा शुद्ध, सरल तथा परिष्कृत होना चाहिए।
- (iv). संक्षेपण में भाव तथा भाषा का प्रवाह होना चाहिए।

संक्षेपण के नियम :—

1. मूल अवतरण को कम से कम तीन बार पढ़ कर आवश्यक शब्दों, वाक्यों को रेखांकित कर लेना चाहिए।
2. रेखांकित वाक्यों के आधार पर एक रूप रेखा तैयार कर लेनी चाहिए।
3. क्रमबद्धता में आवश्यक परिवर्तन किया जा सकता है परन्तु विचारों की तारताम्यता बनी रहना चाहिए।
4. अपनी छोर से किसी भी प्रकार की टिका-टिप्पणी तथा आलोचना-प्रत्यालोचना नहीं होना चाहिए।
5. उद्धरण, उदाहरण, दृष्टान्त, तुलनात्मक विचारों, असम्बद्ध एवं अनावश्यक बातों को हटा देना चाहिए।
6. समास, प्रत्यय, वाक्यांश, वाक्य, मुद्रावरो, कहावतों आदि को एक शब्द या पद रूप में संक्षिप्त करना चाहिए।

7. संक्षेपण में व्याकरण के सामान्य नियमों का पालन होना चाहिए, संक्षेपण तेलीग्राफिक नहीं होना चाहिए।

8. भाषा शुद्ध, सरल तथा स्पष्ट होना चाहिए।

9. शैली 'अन्य पुरुष' होनी चाहिए।

Imp 10. कथन 'भूतकाल तथा परोक्ष' होना चाहिए।

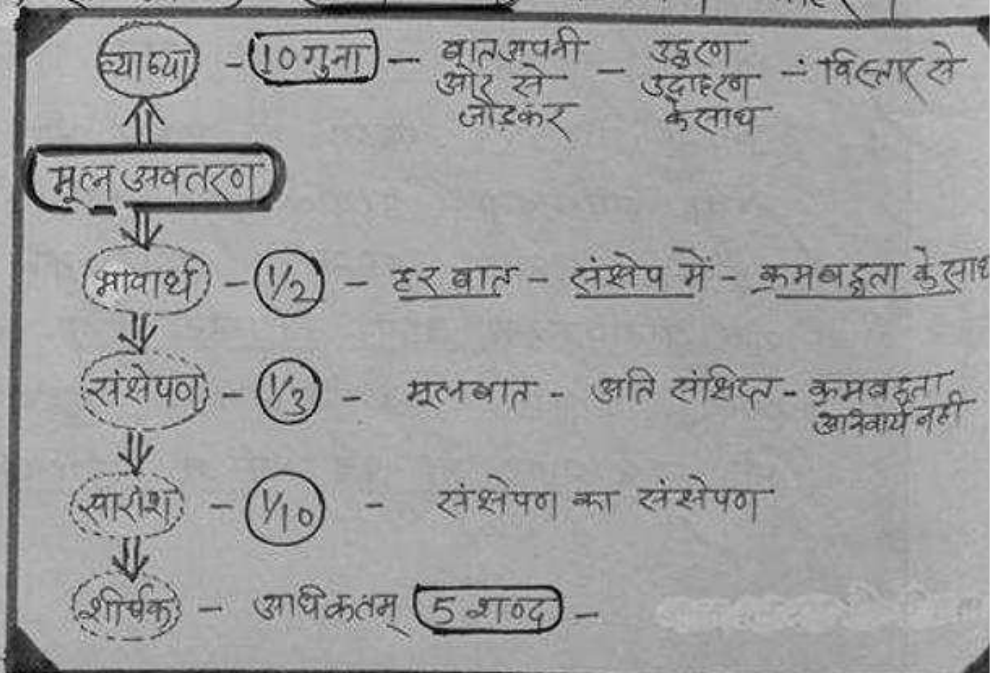
11. रूपरेखा को आन्तेन रूप देने से पहले एक-दो बार ध्यान से पढ़ना चाहिए जिससे आवश्यक विचार करने न पाये।

12. शब्द संख्या पहले से ही निर्धारित का लेना चाहिए जो मूल अवतरण का एक-तिहाई से। आरंभ सेले वाक्य से करना चाहिए, जो मूल विषय को स्पष्ट कर दे।

सारांश :- सारांश संक्षेपण का संक्षेपण होता है। यह मूल अवतरण का $1/10$ ($1/3 \times 1/3$) होता है।

शीर्षक :-

- (i). मूल अवतरण को कई बार पढ़ कर 'केन्द्रीय विषय' ढूँढना
- (ii). शीर्षक बढी होता है जिसका प्रभाव अवतरण में 'आश्रित' रूप से विद्यमान हो।
- (iii). शीर्षक अधिक से अधिक 'पाँच शब्द' का होना चाहिए।



सारणी रूप में सार (Tabular form)

सावधानियों :—

- (i). जिस भाग का संक्षिप्त लेखन लिखना हो उसे सावधानी के साथ पढ़ा जाय तथा उपयोगी व अनुपयोगी अंशों को प्रथक कर लेना चाहिए।
- (ii). संक्षिप्त लेखन अपने शब्दों में होना चाहिए, मूल शब्दों को ही लिखना अच्छा नहीं।
- (iii). एक ही बात कई बुद्धों में अलग-2 हो तो उसे एक साथ संयोजित कर लेना चाहिए।
- (iv). पुनरावृत्ति कदापि नहीं।
- (v). न मूल रूप में संशोधन किया जाय और न ही अपनी तरफ से कुछ जोड़ा जाय।
- (vi). जहाँ अधिकारियों के नाम व पद दोनों का उल्लेख हो, वहाँ नाम छोड़ देना चाहिए। केवल पद नाम का उल्लेख करें।
- (vii). व्याकरण समझी हुई बातें निश्चय ही होनी चाहिए।
- (viii). संक्षिप्त लेखन पहले अल्प लिखकर उसे मूल से मिलाकर लेना चाहिए।
- (ix). संक्षिप्त लेखन केवल एक ही वाक्यार्थ में होनी चाहिए।
- (x). शुरुआत { निवेदन करते हुए...
अपेक्षा करते हुए...
प्रार्थना करते हुए...
सुझाव देते हुए...
प्रार्थना करते हुए...
जानकारी देते हुए...
आभार देते हुए...
About 40 words)
आदि से करना चाहिए।

क्रमांक ↑ क्रमांक	पत्रांक ↑ पत्र-संख्या	दिनांक ↑ तिथि	प्रेषक	प्रेषिनी	विषय तथा आशय
1	309/25/ 2009 (25)	15.1.2013	अपर सचिव भारत सरकार	कुलपति, समस्त विश्व- विद्यालय	<p>स्मरित करने हुए भारत सरकार के अपर सचिव ने समस्त विश्वविद्यालयों के कुलपति से यह अपेक्षा की है कि विविध संकायों में शोधरतना की जाती तथा उन पर व्यय भारत की शोध वि-त मंत्रालय को भेजने की व्यवस्था करें।</p>

(1½), 2, 2, 3, 3, (4½) an.

1. स्मरित करने हुए
2. (प्रेषक) ने
3. (प्रेषिनी) से
4. यह अपेक्षा की है कि
6. (विषय) तथा
7. (आशय) ⇒

भावार्थ [Substance]

गद्यांश या पद्यांश में आये विचारों को संक्षेप व सरल भाषा में लिख देने का प्रयास भावार्थ है।

भावार्थ में तीन बातें ध्यान देना चाहिए :-

- (i). भावार्थ 'संक्षिप्त' होना चाहिए।
- (ii). भावार्थ व्याख्या नहीं है।
- (iii). भावार्थ अन्वयार्थ नहीं है।

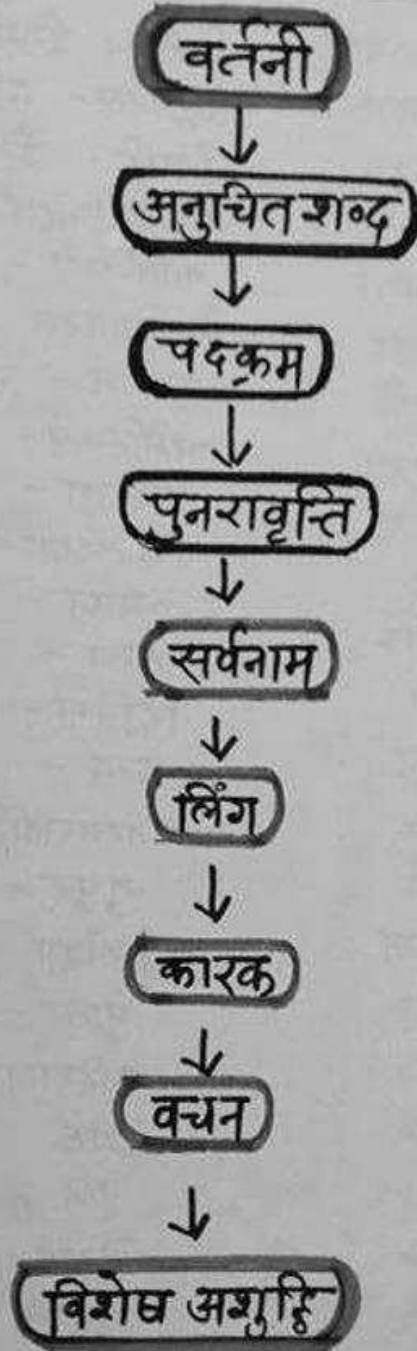
भावार्थ गागर में सागर भरने जैसा है।

इसमें मूल अवतरण का कोई भाव या विचार नहीं डूटना चाहिए। इसमें अपनी ओर से कोई टीका-टिप्पणी या खंडन-मंडन नहीं करना चाहिए। यह सामान्यतः मूल अवतरण का आधा होता है।

भावार्थ की प्राथमिक विशेषता है -

संक्षिप्तता, परन्तु यह संक्षेपण से विलकुल भिन्न होता है जो निम्न है : — : भावार्थ एवं संक्षेपण में अन्तर : —

- (i). भावार्थ में हर बात या विचार संक्षेप में लिखा जाता है परन्तु संक्षेपण में केवल (मुख्य) बात संक्षेप में लिखा जाता है।
- (ii). भावार्थ में क्रमबद्धता अनिवार्य है, परन्तु संक्षेपण में क्रमबद्धता अनिवार्य नहीं है। यदि मूल बात अवतरण में विलकुल बाद में कही गई हो तो उसे पहले लिखा जाता है, परन्तु विचारों में तारतम्यता बनी रहनी चाहिए।
- (iii). भावार्थ गद्यांश का लगभग $\frac{1}{2}$ होता है, जबकि संक्षेपण गद्यांश का लगभग $\frac{1}{3}$ होता है।

वाक्य अशुद्धियाँ

शृंगार - शृंगार	
कवियत्री - कवायित्री	
हँद - हँड	
जार्द - जार्ड	
उपरोक्त - उपर्युक्त	
सन्ध्यास - संध्यास	
खिन्दुर - खिन्दूर	
उज्ज्वल - उज्ज्वल	
प्रज्ज्वल - प्रज्वल	
पूज्यनीय - प्रज्य/शुजनीय	
व्यवसायिक - व्यावसायिक	
राजनैतिक - राजनीतिक	
अंतर्धान - अंतर्धान	
संगठित - संगृहीत	
तत्त्व - तत्त्व	
महत्त्व - महत्त्व	
सौन्दर्यग - सौन्दर्य/सुन्दरता	
निर्देशी - निर्देश	
तरुदाया - तरुच्छाया	
प्रतिदाया - प्रतिच्छाया	
श्रोत - स्त्रोत	
अनाथिनी - अनाथा	
गृहित - गृहीत	
मिषहान्न - मिषहान्न	
अभीवह - अभीष्ट	
गदर्भ - गर्वभ	
श्राप - शप	
गोशुली - गोशुलि	
मंष्ट - मंष्ट	

- ① एक गिलास पानी दिखाएँ।
- ② इस समय मेरी (आयु) 33 वर्ष की है। (उम्र/अवस्था)
- ③ (आँखों) से आँसू निकल (पड़ा)। [आँख - पड़े]
- ④ कृष्ण के (अनेकों) नाम हैं। (अनेक)
- ⑤ उसे (बीना) (बजाना) नहीं (आती)। (बीना - बजानी - आती)

तरुदाया - तरुच्छाया
 तदोपरान्त - तदुपरान्त
 दुरावस्था - दुरवस्था
 नम्रमण्डल - नम्रोमण्डल
 पुरस्कार - पुरस्कार
 सदोपदेश - सदुपदेश
 चक्षुरोग - चक्षुरोग
 निरोग - नीरोग
 सन्मुख - सम्मुख
 अवटवक्र - अपटावक्र
 एकतारा - इकतारा
 एकलौता - इकलौता
 निर्दोषी - निर्दोष
 उंगली - उँगली
 जहां - जहाँ
 डांट - डौंट
 पांचवां - पाँचवाँ
 कौशलया - कोशलया

निर्दयी - निर्दय
 सतोगुण - सन्त्वगुण
 दिवारालि - दिवाराल
 निर्गुणी - निर्गुण
 नेतागण - नेतृगण
 महाराजा - महाराज
 योगीराज - योगिराज
 विद्यार्थीगण - विद्यार्थिगण
 स्वामीशक्ति - स्वामिशक्ति
 प्राग्भवान् - प्राग्यवान्
 विधिवत् - विधिपूर्वक
 श्रीमान् - श्रीमान्
 बुद्धिमान् - बुद्धिमान्
 साक्षात् - साक्षात्
 अंगना - आँगन
 पहुँच - पहुँच
 महंगा - महँगा
 जाऊंगा - जाऊँगा
 मुँह - मुँह
 अनेकों - अनेक

Exp: i. मैं अनेकों बार बनारस गया। (अनेक)

(ii). कृष्ण के अनेकों नाम हैं। (अनेक)

[अनेक स्वयं में बहुवचन है अतः अनेकों गलत है]

(iii). पद्मिनी अपनी सौन्दर्यता के लिए प्रसिद्ध थी।

(सौन्दर्य / सुन्दरता)

मंत्रीमण्डल - मंत्रिमण्डल
 महान् - महान
 जगत् - जगत
 आर्य - आर्य
 कालीदास - कालिदास
 वाल्मीकि - वाल्मीकि
 पाणिनी - पाणिनी
 विरहिणी - विरहिणी
 लातों - लातूँ

गत्यावरोध - गत्यवरोध
 डारिका - डारका
 पशु - पशु
 कुमुदनी - कुमुदिनी
 उषा - उषा
 दुरावस्था - दुरवस्था
 अयोध्या - अयोध्या
 इष्ट - इष्ट
 पूर - पूर

✓ आसी, आसी — आई, आई X
 ✓ खासी, खासी — खाई, खाई X

✓ दुई, दुई — दुयी, दुयी X
 ✓ दुई, दुई — दुयी, दुयी X

{ दीजिए
 लीजिए → लीजिये } X
 पीजिए
 कीजिए
 खालिये — खालिये

2. अनुचित शब्द :-

- (i) आकाश में विजली गरज रही है। (चमक)
- (ii) आकाश में वायुयान दौड़ रहे हैं। (उड़)
- (iii) रेडियो की उत्पत्ति फ़िरने की ? (आविष्कार)
- (iv) एन्नति के मार्ग में संकट भी आते हैं। (बाधाएं)

3. पदक्रम की अशुद्धियाँ :- वाक्य में कभी-कभी शब्द क्रम में नहीं लिखे रहते हैं। जैसे :-

- (i) यहाँ पर शुद्ध गाय का दूध मिलता है।
 यहाँ पर गाय का शुद्ध दूध मिलता है।
- (ii) पानी का एक गिलास लाओ।
 एक गिलास पानी लाओ।
- (iii) मीना ने बाजार से एक मोतियों की माला खरीदी।
 मीना ने बाजार से मोतियों की एक माला खरीदी।
- (iv) कैदी के हाथों में बेड़ियों एवं पैरों में हथकड़ियाँ लगी थीं।
 कैदी के हाथों में हथकड़ियाँ एवं पैरों में बेड़ियाँ लगी थीं।
- (v) मैदान में बहुत से पशु-पक्षी उड़ते एवं चरते हुए दिखाई देते हैं।
 मैदान में बहुत से पशु-पक्षी चरते एवं उड़ते दिखाई देते हैं।

4. पुनरावृत्ति :-

- (i) वह प्रातः काल के समय घूमने जाता है।
- (ii) लम्बे संघर्ष के बाद भारत गुलामी की दासता से मुक्त हुआ।
- (iii) मेरे पास केवल पचास रुपये मात्र हैं।
- (iv) भोजन की व्यवस्था का प्रबन्ध करें।
- (v) रविवार के दिन आफिस बन्द रहता है।
- (vi) राम के वन गमन पर दशरथ विलाप करके रौने लगे
- (vi) आप अपनी बात का स्पष्टीकरण करने के लिए हतबल हैं।
- (vii) मैं सुकुशल हूँ।

5. सर्वनाम संबंधीं अशुद्धियां

- (i). शिकारी ने उस पर गोली चलाई लेकिन शेर बच निकला।
शिकारी ने शेर पर गोली चलाई लेकिन वह बच निकला।

यदि किसी वाक्य में संज्ञा व सर्वनाम दोनों दिए हों
संज्ञा पहले आएगा सर्वनाम बाद में

- (ii) मेरे को नहीं मालूम। (मुझे)
(iii) तेरे को कुछ नहीं मालूम। (तुमको)
(iv) वह लोग जा रहे हैं। (वे)
(v). आप लोग अपने रुपये ले जाइए। (अपने-अपने)
(vi). सब लोग अपनी राय दें। (अपनी-अपनी)

6. लिंग संबंधीं अशुद्धि :-

- (i). मुझे तुमसे एक बात कहना है। (कहनी)
(ii). अंको की औसत अच्छी है।
का अच्छा
(iii). हमारी प्रदेश की जनता बहुत सहनशील है। (हमारे)
(iv). कमीज की आस्तीन फटी है। (का) (फटा)
(v). उसे बीना बजाना नहीं आता।
बीणा बजानी आती
(vi) रेलगाड़ी में भारी अटक भीड़ थी। (संख्या में)
(v). उसने अपनी बात धीरे से बताया। (बतायी)

कमीज, कालर, फूल, तना - पुल्लिंग
बाँह, बटन, पल्लियाँ, डालें - स्त्री लिंग